India Today(Hindi)

Apka kaam apko tabhi safal banata hai jab ooske sath nateeje jude

Date: 11/04/2012 | Edition: National | Page: 16 | Source: Deepshikha Punj | Clip size (cm): W: 39 H: 5

India Media Monitor

India Today(Hindi)

Apka kaam apko tabhi safal banata hai jab ooske sath nateeje jude

Date: 11/04/2012 | Edition: National | Page: 16 | Source: Deepshikha Punj | Clip size (cm): W: 39 H: 5

India Media Monitor

Clip: 2 of 2

"आपका काम आपको तभी सबल बनाता है, जब उसके साथ नतीजे जुड़े हों"

नीता कपूर

एक्जीक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट, गॉडफ्रे फिलिप्स, इंडिया

कैसे हुई शुरुआत....

मैंने अपना करियर एडवर्टाइजिंग और ब्रांड कम्युनिकेशन से शुरू किया था. उन दिनों ब्लॉकबस्टर कॉमर्शियल्स और विज्ञापन हुआ करते थे और मेरे लिए खुशकिस्मती की बात यह थी कि मैं *ओनली विमल* कैंपेन समेत कुछ बेहद क्रिएटिव कामों से जुड़ी हुई थी. लेकिन 1990 के दशक से एडवर्टाइजिंग में कंपनियों की खरीद-फरोख्त का दौर शुरू हो गया, जिसमें इंटरनेशनल कंपनियों ने भारतीय बाजार में पैर पसारे. मुद्रा, जहां मैं काम करती थी, उस समय अपनी पॉजीशन बना रही थी, जबकि कई और कंपनियों पर अनिश्चितता की मार पड़ी हुई थी. इसके बाद मल्टीनेशनल कॉर्पोरेशंस आ गए. तब जाकर मैंने गॉडफ्रे फिलिप्स में मार्केटिंग सेक्टर में जाने का फैसला किया. सेल्स और मार्केटिंग का काम संभालने की चुनौती ने मुझे उत्साहित कर दिया था.

जिंदगी, जैसी हम समझते हैं

महिला सशक्तिकरण सिर्फ मीडिया इंडस्ट्री का गढ़ा हुआ एक शब्द है, क्योंकि परफॉर्मेंस न तो जेंडर से आंकी जाती है, न जेंडर पर निर्भर होती है. कोई शक नहीं कि ऐतिहासिक तौर पर बिजनेस मॉडल्स में पुरुषों का दबदबा रहा है, लेकिन अगर आप यह समझ लें कि कल्चर कैसे काम करता है, तो आप एक नया एन्वॉयर्नमेंट बना सकते हैं. मुझे यह विचार बेहद संकीर्ण लगता है. आपका काम आपको तभी मजबूत बना सकता है, जब उसके साथ परफॉर्मेंस हो और माहौल भी परफॉर्मेंस में योगदान दे सकता है. महिलाओं की भागीदारी की पहचान करनी है, तो ब्रांड पॉजीशनिंग में उनके महत्व को समझ कर देखिए. पहला तरीका है, प्राइमरी उपभोक्ता के तौर पर उनकी भूमिका का. लगभग आधी आबादी महिलाओं की है और बात चाहे कपड़ा खरीदने की हो या कार खरीदने की, फैसला लेने में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. फैसले में उन्हें शामिल करना जरूरी है. एक और पहलू है उनके तमाम तरह के विचारों और नजरिए का. महिलाएं उन विचारों को सामने रखती हैं, जिनसे अतिरिक्त ग्रोथ हो सकती है. सारी बातें अपनी जगह हैं, लेकिन आखिर में हम सभी को अपनी निजी और प्रोफेशनल जिंदगियों को एक साथ संभालना सीखना होता है. यह ऐसा ही है, जैसे पीठ पर बच्चे को लादकर काम करना. लेकिन यह करना ही होता है.

सामाजिक दायित्व

जब हमने ब्रेवरी अवॉर्ड का कैंपेन अपने हाथ में लिया, तो हमारा नजरिया ही बदल गया था. हम चाहते थे कि बहादुरी का दायरा बढ़ाया जाए, क्योंकि यह सिर्फ शारीरिक नहीं होती. बहादुरी का विचार बेहद मनोवैज्ञानिक होता है. विचार यह भी था कि इसमें पारदर्शिता लाई जाए. यह एक सीधी और गंभीर शुरुआत थी. बहादुर लोगों की तलाश करने और उन्हें सामने लाने के लिए हमने काफी मेहनत की. हमारे कैंपेन के बाद बाजार में कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व कैंपेन की भीड़ लग गई. लेकिन हम लोग सफल रहे और बहादुरी को लेकर समझ में बदलाव आया. सोशल मीडिया के क्षेत्र में हमने सिर्फ कदम रखा है और अब तक जो नतीजा देखने को मिला है, वह बहुत अच्छा है. हमने जो एक और कैंपेन शुरू किया, वह था आमोदिनी. इसका लक्ष्य महिलाओं को जॉब्स, स्किल्स और अवसर मुहैया कराना था. फिलहाल हम हरियाणा, राजस्थान और अल्मोड़ा में तीन गांवों में काम कर रहे हैं. मेरा मानना है कि इसमें शामिल महिलाओं की संख्या अगले तीन से पांच वर्षों में बढ़ाकर 1 लाख कर दी जाए. हमारा चौथा साल चल रहा है और हमने महिलाओं को एम्पावर करने की खातिर उनके लिए अवसर पैदा करने के लिए कई नॉन-प्रॉफिट संगठनों के साथ समझौते किए हैं.

सफलता के टिप्स

- **कोई शॉर्ट-कट नहीं**
  काम का कोई आसान तरीका नहीं होता, ईश्वर का स्वरूप विशाल है.
- **सपने और भविष्य की सोच**
  आपको सपने जरूर देखने चाहिए और अपने आप पर विश्वास करना चाहिए. भविष्य की दृष्टि ही असली नेता की पहचान होती है.
- **अपनी गलतियों से सीखें**
  बांहें चढ़ाएं और कड़ी मेहनत करें. आगे आकर नेतृत्व करें. गलतियां हो जाने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन सीखने की कोशिश जरूर करें.
- **खुश रहें**
  उतना ही उपभोग करें, जितने की जरूरत है. खुश रहने की कोशिश करें.

धर्म, कर्म और योगा

मैं सुबह जल्दी उठने वालों में से हूं और अपने दिन की शुरुआत ध्यान लगाने से करती हूं, इससे मुझे अपने लिए थोड़ा मौका मिलता है. सुबह सवा आठ बजे तक मैं काम के लिए निकल जाती हूं. मैं सोचती हूं कि मैं अच्छी लड़कियों में से एक हूं लेकिन लोगों से मेलजोल रखने के लिहाज से मैं बहुत अच्छी नहीं हूं. जो सामने दिखता है, मैं उसे पढ़ जाती हूं. फिक्शन से लेकर अध्यात्म और बिजनेस तक कोई भी किताब पर मैं मुग्ध हो जाती हूं. मेरी बेटी दिल्ली से बाहर पढ़ रही है, और शाम का समय मैं अपने पति के साथ बिताती हूं. आप कह सकते हैं कि मैं बहुत आध्यात्मिक भी हूं.

स्मार्ट जनरेशन

मौजूदा पीढ़ी हमारी पीढ़ी की तुलना में कहीं ज्यादा चतुर और अवसरवादी है. वे लोग सिर्फ अपने काम पर बहुत ज्यादा ध्यान देते हैं. उनके लिए मेरी सलाह है कि शॉर्ट-कट्स की तलाश में न रहें, क्योंकि ईश्वर विस्तार में बसता है. इसके अलावा उन्हें बहुत ज्यादा स्वार्थ से बचना चाहिए और दुनिया को वापस देना सीखना चाहिए.

—दीपशिखा पुंज